

---

shrIDattatreya aparAdhakShamApaNastotram 2

श्रीदत्तात्रेयापराधक्षमापणस्तोत्रम् २

Document Information

---

Text title : dattAparAdhakShamApana2

File name : dattAparAdhakShamApana2.itx

Category : aparAdhakShamA, deities\_misc, dattAtreya, vAsudevAnanda-sarasvatI

Location : doc\_deities\_misc

Author : vAsudevAnandasarasvatI (TembesvAmi)

Transliterated by : Dinkar Deshpande <dinkar.deshpande at gmail.com> ,

Proofread by : Dinkar Deshpande <dinkar.deshpande at gmail.com> ,

Latest update : April 25, 2010

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीदत्तात्रेयापराधक्षमापणस्तोत्रम् २



रसज्ञावशातारकं स्वाद्युलभ्यम्

गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ॥ १ ॥

वियोन्यन्तरे दैवदारुण्या विभोप्राग्

गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ॥ २ ॥

मया मातृगर्भस्थितिप्राप्तकष्टात्

गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ॥ ३ ॥

मया जातमात्रेण संमोहितेन

गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ॥ ४ ॥

मया कीडनासक्तचित्तेन आव्ये

गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ॥ ५ ॥

मया यौवनेऽज्ञानतो भोगतोषाद्

गृहीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रभो क्लिन्नचित्त ॥ ६ ॥

मया स्थाविरेनिघ्नसर्वेन्द्रियेषु

गुडीतं कदाचिन्न ते नाम दत्त ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रबो क्लिन्नचित्त ॥ ७ ॥

दृषीकेश मे वाऽननःकायजातम्

उरेज्ञानतोऽज्ञानतो विश्वसाक्षिन् ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रबो क्लिन्नचित्त ॥ ८ ॥

स्मृतो ध्यात आवाहितोऽस्यर्थितो वा

न गीतः स्तुतो वन्दितो वा न जप्तः ।

क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं

क्षमस्वापराधं प्रबो क्लिन्नचित्त ॥ ९ ॥

दयाब्धिर्भवाद्दुःखसागाश्च मादृग्

भवत्यात्ममन्तोर्भवान्मे शरण्यः ।

यथालम्बनं भूर्द्धिं भूनिःसृतांघ्रे

रिति प्रार्थितं दत्तशिष्येषु सारम् ॥ १० ॥

॥ इति परमपूज्य श्रीमद् वासुदेवानन्दसरस्वती

स्वामीमहाराजकृत अपराधक्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by

Dinkar Deshpande dinkar.deshpande@gmail.com

Sunder Hattangadi

---

*shrIDattatreya aparAdhakShamApaNastotram 2*

pdf was typeset on September 17, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

